



Sanvahak (संवाहक)

An International Peer Reviewed, Refereed, Indexed, Multidisciplinary (All Discipline/Subjects), Multilingual (All Languages) & Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)

IIFS Impact Factor-5.25

Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2026

Page No.- 55-58

©2026 Sanvahak

<https://sanvahak.gyanvidya.com>

Author's:

सुप्रिया सिंह

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), जयप्रकाश
विश्वविद्यालय, छपरा.

Corresponding Author :

सुप्रिया सिंह

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), जयप्रकाश
विश्वविद्यालय, छपरा.

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' विरुद्धों का सामंजस्य

शोध सारांश—छायावाद के चार स्तम्भों में से एक हैं—सूर्यकांत त्रिपाठी निराला। निराला द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' एक अद्भुत शक्ति काव्य है। 'राम की शक्तिपूजा' का मुख्य कथानक कृतिवास की बंगला रामायण से लिया गया है। यह कविता संक्रमण काल की कविता है। इसका एक कदम अगर छायावाद में है तो दूसरा प्रगतिवाद में। इस संक्रमण से ही स्पष्ट होता है कि कहीं न कहीं मन के गहरे स्तर पर कवि के भीतर एक द्वंद्व है, एक खोज है, एक छटपटाहट है। छायावादी कुहेलिका से बाहर निकलने की कोशिश ही प्रगतिवादी चेतना है। इस लम्बी कविता में द्वंद्व कई स्तरों पर हैं। प्रकाश एवं अंधकार का द्वंद्व, लोक एवं शास्त्र का, तत्सम एवं तद्भव का, अतीत एवं वर्तमान का, अनैतिकता एवं नैतिकता का, जीवन एवं प्रकृति का, हार्दिकता एवं बौद्धिकता का, इतिहास एवं संस्कृति का तथा परंपरा एवं आधुनिकता का। मतलब पूरी की पूरी कविता द्वंद्वात्मक शिल्प में गढ़ी गई है। अब हमें देखना यह होगा कि कवि ने कहाँ तक इन द्वंद्वों का समाहार करके अपनी सर्जनात्मक क्षमता का परिचय दिया है। इस शोध पत्र में इन्हीं द्वंद्वों को दिखाने की कोशिश की गई है।

बीच शब्द—द्वंद्वात्मकता, आत्मसंघर्ष, मानवमूल्य, विरुद्धों का सामंजस्य, लोक संस्कृति में राम लोक एवं शास्त्र का द्वंद्व।

मूल आलेख—कविता 'रवि हुआ अस्त' से शुरू होती है और 'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन' से खत्म। शुरुआत में ही कवि पाठक को आगाह कर देना चाहता है कि आगे अंधकार एक प्रभावशाली भूमिका में आने वाला है। युद्ध के प्रथम दिन राम उदास युद्ध क्षेत्र से लौट रहे हैं 'नमित मुख सांध्य कमल'। रघुकुल के जितने भी मंत्राभिषिक्त वाण थे वे आज युद्धक्षेत्र में श्रीहत् हो गए।

निराला शब्दों के जादूगर हैं। कठोर बिंबों के साथ मसृण बिम्बों का सफल प्रयोग निराला से बेहतर कोई नहीं कर सकता। युद्ध क्षेत्र से लौटते हुए राम के बारे में निराला कहते हैं—'अवनी पर नवनीत-चरण'।

जीवन एवं प्रकृति का द्वंद्व इस कविता की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। रावण के खिलाफ राम का युद्ध प्रतीकात्मक है। यह कोई वैयक्तिक युद्ध नहीं बल्कि सामाजिक है। राम किसी व्यक्ति का नाम नहीं बल्कि नैतिक मूल्यों के संस्थापक का नाम है। रावण अनैतिक आचरण का प्रतीक है। सीता राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतिमूर्ति है। होना यह चाहिए था कि जब राम रावण के खिलाफ युद्ध की घोषण करते तो प्रकृति की तमाम शक्तियाँ राम के पक्ष में हो जाती लेकिन ऐसा नहीं हुआ। निराला प्रकारान्तर से शायद यह कहना चाहते हैं कि जीवन इतना सरल एवं आसान नहीं। प्रकृति के चार तत्त्व राम के खिलाफ हैं। सिर्फ एक तत्त्व राम के पक्ष में है, और वह है—'अग्नि'। निराला इस द्वंद्व को दिखाते हुए कहते हैं—

हे अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल,

भूधर ज्यों ध्यान मग्न, केवल जलती मशाल।¹

निराला द्वंद्वों के माध्यम से जो नाटकीयता पैदा करते हैं वह मारक है। दो विपरीत विचार वाले बिंबों को एक साथ पिरोकर निराला कविता में एक गजब का प्रभाव पैदा करते हैं। मनोविज्ञान भी कहता है कि सफेद के पास काले रंग को लाने पर सफेद ज्यादा सफेद नजर आता है और काला ज्यादा काला। युद्ध क्षेत्र में सारे वाण खंडित होने के बाद राम की मनोदशा है—‘विजय होगी न समर’। मन के कोने में शंका का भाव कहीं—न—कहीं है। निराला कहते हैं—

‘स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर—फिर संशय,
रह—रह उठता जंग जीवन में रावण—जय—भय।’²

रघुकुल का वह नायक जो आज तक अधीर नहीं हुआ, जिसने जीवन के तमाम झंझावती थपेड़ों में हिलना तक नहीं सीखा, वह संशय शील है। ऐसी कठिन परिस्थिति में प्रिया की छवि का मूर्त होना रम की निराशा में आशा की एक किरण का उपस्थित होना है। यह निराला की रचनात्मक ईमानदारी है। कवि कहता है—

‘ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसा विधुत
जागी पृथ्वी—तनया—कुमारिका—छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का—प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का—नयनों से गोपन—प्रिय संभाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान—पतन,
काँपते हुए किसलय—झरते पराग—समुदय,
गाते खग नव—जीवन—परिचय—तरुमलय—वलय,
ज्योतिः प्रपात स्वर्गीय,—ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,
जानकी—नयन—कमनीय प्रथम कंपन तुरीय।’³

निराला कॉन्ट्रास्ट के कवि हैं। जैसा कि शुरू में ही संकेत किया गया कि शिल्प वही नहीं जो सिर्फ नींव का पता दे बल्कि भाषा एवं बिंबों की जो गहराई एवं गरमाई है, उसकी भी जानकारी दे।

राम ने युद्ध—क्षेत्र में आज भीमा को देखा। कैसे नहीं होते राम के वाण खंडित? राम की परेशानी यह नहीं कि उनके तूणीर के सारे के सारे वाण बुझ गए बल्कि यह—

‘फिर देखी भीमा मूर्ति आत रण देखी जो
आच्छादित किये हुए सम्मुख समग्र नभ को,
ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बूझ—बूझ कर हुए क्षीण,

×

×

×

लख शंकाकुल हो गए अतुल—बल शेष—शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन।
फिर सुना—हँस रहा अट्टहास रावण खल—खल,
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्ता—दल।’⁴

सानु पर्वत पर सभा लगी हुई है। राम उदास बैठे हैं। उदासी के दो कारण हैं—एक, ‘विजय होगी न समर’ एवं दूसरा, ‘अन्याय जिधर हैं उधर शक्ति!’ वहाँ उपस्थित सारे लोग अपने—अपने तरीके से रम की उदासी को दूर करने का उपचार बताते हैं। लक्ष्मण तेजी से चमकते हैं, हनुमान उन्चासों पवन के वेग के साथ आकाश में उठते हैं और सागर में फेन पैदा कर देते हैं। विभीषण युद्ध क्षेत्र में प्रोटोकॉल की प्रविधि बताते हैं लेकिन राम के बदन में सिहरन तक नहीं होती। उस सभा में उपस्थित सबसे बुजुर्ग व्यक्ति भल्लनाथ जाम्बवान जब अपना नुरुखा पेश करते हैं तो—

‘खिल गयीं सभा! “उत्तम निश्चय यह, भल्लनाथ”
कह दिया वृद्ध को मान राम ने झुका माथ।’⁵

जामवन्त ने जो शोध का सूत्र दिया, निराला की मौलिकता यही है। कठिन एवं विपरीत परिस्थिति में जामवन्त का समीकरण इस बात का संकेत है कि अनुभव का कोई विकल्प नहीं जामवन्त कहते हैं—

‘रघुवर विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरुष—सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संगत प्राणों से प्राणों पर,
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त
शक्ति की करो मौजिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनंदन।’⁶

शोध की यह प्रविधि कविता की केन्द्रीय भावभूमि है। कविता यहाँ बेहद गंभीर हो जाती है। ‘आराधन’ एवं ‘द्वंद्व’ इस बात का संकेत करता है कि दुनिया में कुछ भी निरपेक्ष नहीं। यहाँ सब कुछ सापेक्ष है। अगर आराधन के बल पर एक

अनैतिक व्यक्ति भीमा को वश में कर सकता है तो हे राम, तुम तो नैतिक मूल्यों वाले मर्यादा पुरुषोत्तम हो। तुम द्वंद्व आराधन करो। दूसरी बात यह कि रावण की शक्ति का प्रयोग कहाँ हो रहा है? एक परायी स्त्री को बंदिनी बनाने में। लेकिन तुम्हारी शक्ति का प्रयोग उसको मुक्त करने में होगा। जाहिर है उसकी शक्ति की दिशा परगामी है जबकि तुमहारी स्वगामी।

‘शक्ति की करो मौलिक कल्पना’ कविता की वह केन्द्रीय ऊँचाई है जहाँ से पूरी की पूरी कविता आलोकित होती हुई दिखती है। निश्चय इसका आवरण है। यह शोध का परिणाम होती है। शक्ति के लिए अपने को तपाना होगा, गलाना होगा, मिटाना होगा। वैयक्तिक हितों में उलझते रहने से शक्ति नहीं हासिल हो सकती। जब तक वैयक्तिकता का सामाजिकता में विसर्जन नहीं होगा तथा हार्दिकता एवं बौद्धिकता का समन्वय नहीं होगा, शक्ति हासिल नहीं हो सकती।

राम दुर्गा के पैरों तले बैठे सिंह को अपना प्रतीक मानकर नवरात्र के शारदीय माहौल में शोध पर बैठ जाते हैं। प्रतिदिन एक कमल चढ़ाकर उस दिन की पूजा की पूर्णाहुति करते हैं। अंतिम दिन जब पूजा समाप्त होने वाली है और सिद्धि मिलने ही वाली है, रात्रि के मध्य प्रहर में दुर्गा चुपके से आकर अंतिम कमल चुरा ले जाती है। राम जैसे ही अंतिम इंदीवर को चढ़ाने के लिए हाथ बढ़ाते हैं, वहाँ रिक्त स्थान पाकर बिल्कुल असमंजस की स्थिति में आ जाते हैं। पूजा से उठना असिद्धि होगी। संकट की इस घड़ी में राम अपने जीवन को धिक्कारते हुए कहने लगते हैं—

‘धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।’⁷

राम की निरीहता छिपाए नहीं छिपती। आखिर संघर्ष की भी कोई सीमा होती है। जीवन का यह कठिन क्षण और ऐसे कठिन क्षणों में फिर एक बार कोमल बिंब कविता के द्वंदात्मक शिल्प को उद्घाटित करते हैं—

‘जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका,

वह एक और मन रहा राम का जो न थाका।’⁸

शक्ति सिर्फ श्रद्धा से हासिल नहीं किया जा सकता बल्कि उसके लिए इडत्व भाव भी जरूरी है। राम की पूजा स्खलित हुई, शोध पूरा न हो सका, इसके पीछे सिर्फ कारण यही था कि राम ने अभी तक सिर्फ हार्दिकता से काम लिया था जबकि निराला यह कहना चाहते हैं कि भक्ति के लिए हार्दिकता एवं बौद्धिकता दोनों आवश्यक है। राम विश्वास की धरती से उतर कर विवेचना की पगडंडी पर आ जाते हैं—

‘बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विधुत—गति हतचेतन

राम में जगी स्मृति ; हुए सजग पा भाव प्रमन।’

×

×

×

“यह है उपाय” कह उठे राम ज्यों मन्द्रित धन—

‘कहती थीं माता मुझे सदा राजीव नयन।

दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण

पूरा करता हूँ देकर भातः एक नयन।’⁹

हार्दिकता और बौद्धिकता का मिलन इस कविता की संजीवनी है। यही शक्ति का उत्स है, यही निराला की मूल कल्पना है। ‘कमायनी’ में हमने देखा कि जब तक मनु, श्रद्धा एवं इडा का समाहार नहीं हुआ, मानवता विजयी नहीं हुई और आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकी। जैसी ही तीनों की समस्ता की बात की गई जीवन का सच हासिल होता हुआ दिखने लगा। यहाँ निराला शक्ति संधान के लिए अनुभूति एवं विवेक को, निष्ठा एवं प्रज्ञा को तथा विश्वास एवं विवेचना को समीकृत करना चाहते हैं। कठिन परिस्थिति में माँ का स्मरण इस बात का संकेत है कि आज हम आधुनिकता की इस अँधी दौड़ में कितना भी आगे क्यों न बढ़ जाएँ, परंपरा कभी भी अप्रासंगिक नहीं होती। परंपरा का विस्मरण व्यक्तित्व का विघटन है।

राम अपने तरक्का से लक-लक करते हुए ब्रह्मास्त्र को खींच लेते हैं दाहिनी आँख निकालने के लिए जैसे ही वे दृढ़ प्रतिज्ञा हो जाते हैं—

‘काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय—

“साधु, साधु, साधक धीर, धर्म—धन धान्य राम!”

कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।

×

×

×

होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।

कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।’¹⁰

विषाद और आत्म-तोष के द्वंद्व से गुज़र कर कवि तीसरे और अंतिम छंद में एक प्रशमित मनः स्थिति में पहुँचता है। व्यावहारिक जीवन की सारी निराशा के बावजूद कवि को आश्वासन है कि वह अपनी रचना में जीवित है और रहेगा—

मैं अलक्षित हूँ, यही

कवि कह गया है।¹¹

निराला जीवन और साहित्यिक संग्राम में एक दुर्द्धर्ष योद्धा की तरह आजीवन संघर्षरत रहे। जीवन में कितने तुफानों और झंझावातों का सामना करते हुए भी वे एक अचल भूधर की तरह अडिग रहे और अपनी साहित्यिक साधना में लीन रहे। जीवन में उनको अनेक बार विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, इस लम्बी कविता में निराला ने युग सत्य और सार्वकालिक सत्य की जो बात की है वह कुछ और नहीं बल्कि ‘व्यक्तिगत निर्णय’ और ‘सामाजिक निर्णय’ से जुड़ी हुई कोई

बात हैं। युग-सत्य तत्कालीन चेतना का सत्य की न कोई सीमा होती है न काल की कोई अवधि। यह शाश्वत होता के प्रवाह में निराला ने आस्था एवं विवेक, हार्दिकता एवं बौद्धिकता, विश्वास एवं प्रज्ञा तथा अतीत एवं वर्तमान का जो समाहार दिखाया है और जिस समाहार के बाद शक्ति का प्रकटकरण हुआ है, वही आदिम सच है, सार्वकालिक सत्य है। निराला ने पुरातन कथानक के ऊपर आधुनिक दृष्टि से लैस होकर शाश्वत भाव की जो इमारत खड़ी की है, वह हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है। राम-रावण का युद्ध इस कविता की ठोस ज़मीन है। ऊपर से दिखने वाला यह समर सिर्फ व्यक्तिगत नहीं बल्कि कहीं गहरे स्तर पर सामाजिक भी है। रावण किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं बल्कि यह प्रतीक है मूल्यहीनता का, अनैतिकता आचरण का, परगामिता का एवं दुराचार का।

निष्कर्ष : 'राम की शक्ति-पूजा' की कथा पौराणिक है, भाव शाश्वत है पर विचार पूरी तरह आधुनिक है। 'कामायनी' तो हार्दिकता एवं बौद्धिकता की खींच-तान में जगह-जगह से मसक गई है जबकि 'राम की शक्ति-पूजा' अपने शिल्पगत वैशिष्ट्य के कारण हिन्दी-साहित्य में अद्वितीय कविता बन गई। जैसा कि शुरु में संकेत किया गया कि शिल्प का मतलब सिर्फ आवरण ही नहीं होता बल्कि एक आचरण भी होता है। जाहिर है, कथानक से लेकर भाषा तक, प्रतीक से लेकर बिंब तक, तत्समता से लेकर तदभवता तक तथा शब्द-विन्यास से लेकर वाक्य-संगठन तक यह कविता जिस एक प्रविधि में पिरोयी हुई है उसका नाम है-द्वंद्वत्मक शिल्प। पूरी की पूरी कविता नाटकीय प्रभाव की कविता है। निराला के हाथ में दो कैमरे हैं। कभी वे क्लोज-अप लेते हैं तो कभी लॉग-शॉट्स। कभी वातावरण को विरल कर देते हैं तो कभी सघन। जहाँ कवि बातचीत करता है वहाँ कविता सरल लगती है लेकिन जैसे ही वह दर्शन की ऊँचाई पर पहुँचता है, कविता सघन हो जाती है। कठोर बिम्बों के बगल में मसृण बिम्बों की योजना निराला की काव्यात्मक प्रतिभा की बानगी है। पूरी कविता के शिल्पगत वैशिष्ट्य के लिए अगर सिर्फ एक शब्द का प्रयोग किया जा सकता है तो यही कि पूरी की पूरी कविता विरुद्धों के सामंजस्य की कविता है, जो रामकथा : लोक और शास्त्र की अवधारणा को प्रकट करता है।

संदर्भ सूची :

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, लोकभारती संस्करण : 2012, 'राग-विराग', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ०-93-94
2. वही, पृ०-94
3. वही, पृ०-94
4. वही, पृ०-95
5. वही, पृ०-100
6. वही, पृ०-99
7. वही, पृ०-103
8. वही, पृ०-103
9. वही, पृ०-103
10. वही, पृ०-104
11. रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्रथम संस्करण : 1986, तेइसवां संस्करण : 2022, 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ०-130

•